हिपेटिक कोमा
(HEPATIC COMA)

हिपेटाइटिस पीलिया तथा यकृत के सिरोसिस हो जाने से "हिपेटिक प्री कोमा" एवं "कोमा" उत्पन्न हो जाता है। यह एक गंभीर एवं भयंकर नाड़ी सम्बन्धी बीमारी है। इसके मुख्य कारण है —

i) वाइरल हिपेटाइटिस एवं पीलिया
ii) यकृत के सिरोसिस
iii) यकृत के शल्य चिकित्सा होने पर
iv) अत्यधिक मद्यपान
v) विषाक्त पदार्थों का डीटॉक्सीफिकेशन

लक्षण

लक्षण:
- सुनाई नहीं देना
- आलस्य एवं उबान
- पागलों जैसा व्यवहार
- चिड़चिड़ापन
- पेशियों में पीड़ादायक संकुचन

"हिपैटिक कोमा" की स्थिति में पौष्टिक तत्वों की मांग।—

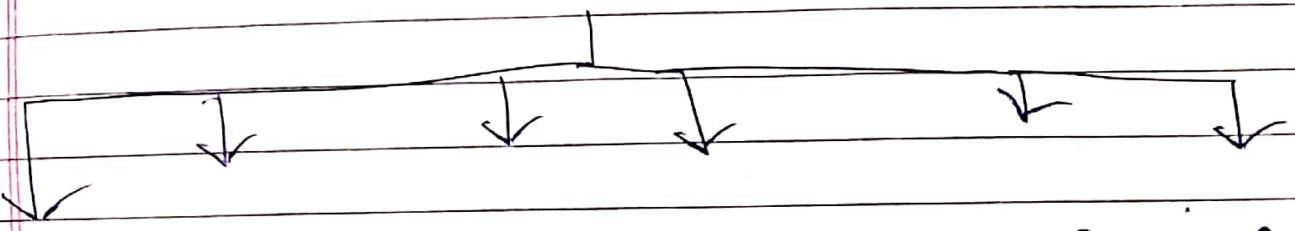

- प्रोटीन
- ऊर्जा
- वसा
- कार्बोज
- विटामिन
- खनिज लवण

→ नाक द्वारा भोजन दिया जाना :—

यदि रोगी मुँह से भोजन लेने में असमर्थ है तब उसे नाक नली के द्वारा दी जानी चाहिए।
नाक से नली द्वारा भोजन का संगठन निम्नानुसार होना चाहिए।

ग्लूकोज	— 200 ग्राम
संतरे का रस	— 1000 ml
पानी	— 1000 ml
कुल मात्रा	2000 ml

तरल आहार की कुल मात्रा (2000 ml) को 10 खुराकों में दी जानी चाहिए। प्रत्येक 2 घंटे के अन्तराल पर 200 ml तरल आहार दिया जाना चाहिए। सभी आवश्यक विटामिनों को तरल आहार में घुलाकर दिया जाना चाहिए। आहार सुबह 6 बजे से प्रारम्भ करके रात 12 बजे तक दिया जाना चाहिए।